विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	प्रस्तावना	5
1.	ओंकार ध्वज (जयति, ओ३म् ध्वज)	7
2.	ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम	9
3.	आत्म बोध (ओ३म् अनेक बार बोल.)	12
4.	गीता के दो श्लोक	14
5.	गायत्री जप का प्रभाव	16
6.	संस्कृत भाषा	19
7.	राष्ट्रभाषा हिन्दी	23
8.	पंच महायज्ञ	28
9.	डी. ए. वी. गान (अविरल निर्मल)	34
10.	योग की पहली सीढ़ी—यम	36
11.	योग की दूसरी सीढ़ी—पाँच नियम	42
12.	वर्ण व्यवस्था का स्वरूप	47
13.	आश्रम व्यवस्था	52
14.	किस दर जाऊँ (तेरे दर को छोड़कर)	56
15.	आर्य समाज के नियम (7-10)	58
16.	सत्यार्थ प्रकाश	62
17.	डी. ए. वी. संस्थाएँ	69
18.	न्यायमूर्ति डॉ. मेहर चन्द्र महाजन	73
19.	राष्ट्रीय गीत	77
20.	नित्य कर्म के मन्त्र—	79
	(केवल पठनीय, परीक्षा में नहीं पूछे जाएँगे)	
	पठनीय पुस्तकें	
	आर्य समाज के नियम	

पाठ-1

ओ३म् ध्वज

जयति ओ३म् ध्वज व्योम-बिहारी।
विश्व-प्रेम-प्रतिमा अति प्यारी।।
सत्य सुधा बरसाने वाला
स्नेह-लता सरसाने वाला
साम्य-सुमन विकसाने वाला
विश्व-विमोहक भवभयहारी।।1।।

इसके नीचे बढ़ें अभय-मन।
सत्पथ पर सब धर्मधुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन।
आलोकित होवें दिशि सारी।।2।।
इससे सारे क्लेश शमन हों।
दुर्मति दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों।
प्रेम तरंग बहें सुखकारी।।3।।

इसी ध्वजा के नीचे आकर।
ऊँच नीच का भेद-भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर।
पन्थाई पाखंड बिसारी।।4।।

इसी ध्वजा को लेकर कर में।
भर दें वेद-ज्ञान घर-घर में।
सुभग शान्ति फैले जगभर में।
मिटे अविद्या की अँधियारी।।5।।

विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ावें।
सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन-ज्योति जगावें।
त्याग-पूर्ण हो वृत्ति हमारी।।6।।

आर्य जाति का सुयश अक्षय हो।
आर्य ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो–
आर्य बनावें वसुधा सारी।। 7।।

भावार्थ : ओ३म् ध्वज ही सार्वभौम ध्वज है क्योंकि यह ईश्वर का प्रतीक होते हुए हमारे जीवन को सभी क्षेत्रों में प्रगति करने की प्रेरणा देता है। यह हमें सभी मानवीय गुणों को धारण करने की प्रेरणा देता है। ओ३म् ध्वज की जय हो।

अभ्यास

1. 'जयति ओ३म् ध्वज व्योम बिहारी' गीत किस झंडे को फहराने पर बोला जाता है?
2. 'साम्य सुमन विकसाने वाला' का क्या अभिप्राय है?
3. 'इसके नीचे बढ़ें अभय मन' में 'इसके' का अर्थ बताइए।
4. वेद ज्ञान के घर-घर में भर जाने का क्या लाभ होगा?
5. आर्यजनों का अटल निश्चय क्या होना चाहिए?

पाठ-2

ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम

ओ३म् की महिमा

(1) ओ३म् नाम भगवान का सर्वानन्द निधान, सब नामों में श्रेष्ठ है करते वेद बखान।

(2) ओ३म् नाम के जप से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी सुखों का स्वामी बन जाता है।

(3) वाणी में पवित्रता आती है।

(4) मनुष्य की सभी शुभकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

(5) ओ३म् नाम ही इस संसार का एकमात्र रत्नकोष है। विश्व के समस्त रत्नकोष को प्राप्त कर लेने पर जितना आनन्द प्राप्त होता है, उससे अधिक आनन्द ओ३म् नाम के अमृत रस से भक्तों को प्राप्त होता है।

(6) ओ३म् जगत् का अनुपम आधार है।

(7) ओ३म् नाम का गुणगान करने वाला मनुष्य किसी से पराजित नहीं होता है।

(8) ओ३म् नाम मानव के मन-मन्दिर की ज्योति का प्रकाश है।

(9) ओ३म् नाम के जप से रसना रसीली हो जाती है।

(10) ओ३म् नाम का जप करने से मानव विश्व के वैभव का स्वामी बन जाता है।

(11) ओ३म् नाम का जप करने वाला जीवन-संग्राम में कभी निराश

नहीं होता है।

(12) ओ३म् नाम को प्राप्त कर लेने पर ऐसी निष्ठा बन जाती है कि मानव लाख कामों को छोड़कर ओ३म् नाम के जप में मग्न हो जाता है।

ईश्वर सर्वश्रेष्ठ, परम, सत्, चित, आनन्द और अनन्तगुणसम्पन्न सत्ता है। गुणों के अनन्त होने से ईश्वर के नाम भी अनन्त हैं। आर्य समाज के दूसरे नियम में सृष्टिकर्त्ता आदि जो नाम दिए हुए हैं, वे ईश्वर के विभिन्न गुणों के कारण ही हैं। किन्तु ईश्वर का निज और सर्वश्रेष्ठ नाम ओ३म् ही है।

ओ३म् नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
जो इसका सुमिरन करे, शुद्ध आत्मा होय।।

ईश्वर ने सृष्टि को उत्पन्न किया है, वही इसका पालन करता है और अन्त में वही इसे समेट लेता है। ओ३म् के अ उ म्—ये तीन अक्षर सृष्टि के इसी आदि, मध्य और अन्त के द्योतक हैं। महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ' प्रकाश में प्रथम समुल्लास के प्रारम्भ में ही लिखा है, "(ओ ३ म्) यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है।"

ओ३म् सारे संसार का प्राण है। सृष्टि उत्पत्ति के समय सबसे पहला जो नाद हुआ वह ओ३म् था। अब भी जब और कोई ध्वनि नहीं होती तो यही ओ३म् की ध्वनि, न केवल बाह्य श्रोत्र ही सुनते हैं अपितु अन्तःकरण भी ओ३म् का ही नाद सुनता है।

सारे शास्त्रों ने ओ३म् ही को परमात्मा का निज नाम दर्शाया है और तो और तान्त्रिक मन्त्र भी तब तक पूर्ण नहीं होते, जब तक उनके आदि में ओ३म् न बोला जाए।

ओ३म् ही भवसागर से पार लँघानेवाला है। मानव जीवन का आदि-अन्त यही है। भगवान् का नाम हमारी परम्परा में जन्म लेते ही बच्चे को मन्त्र के रूप में दे दिया जाता है।

श्री गुरु नानकदेव जी महाराज ने भी कहा है, "एक ओंकार सत् नाम कर्ता पुरख।" ओ३म् और ओंकार दोनों का तात्पर्य एक ही है।

उपनिषदों ने स्पष्ट कहा है :

ओंकार एवेदं सर्वम्,

अर्थात् यह सब कुछ ओ३म् ही है।

जो पहले था, जो है, जो आगे होगा सब ओंकार है। अर्थात् ओंकार सदा रहता है और जब यह सब कुछ नहीं रहता, तब भी ओंकार विद्यमान रहता है।

ओ३म् सारे रसों का अन्तिम सार है।

जो उपासक सर्वव्यापी परमेश्वर का ओ३म् के द्वारा ध्यान करें, वह ब्रह्म को पाता है।

निश्चित रूप से ओ३म् का मानसिक जप हृदय में ज्योति प्रकट करता है, परन्तु यह होंठ या कंठ से नहीं, हृदय से हो। हृदय द्वारा जप के सम्बन्ध में यह कहा है :

जवहि नाम हिरदय धर्‌यो, भयो पाप को नास।
जैसे चिनगी आग की, पड़ी पुराने घास।।

अभ्यास

1. भगवान का सर्वश्रेष्ठ नाम क्या है?
2. वाणी में पवित्रता कैसे आती है?
3. जगत् का अनुपम आधार कौन है?
4. मानव के मन-मन्दिर की ज्योति का प्रकाश-पुंज कौन है?
5. ओ३म् नाम को प्राप्त कर लेने से मनुष्य की कैसी निष्ठा बन जाती है?
6. ओ३म् शब्द की व्याख्या कीजिए।
7. गुरु नानकदेव जी ने ओ३म् को क्या कहा है?
8. ओ३म् नाम का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

पाठ-3

आत्म बोध

ओ३म् अनेक बार बोल
प्रेम के प्रयोगी।
है यही अनादि नाद, निर्विकल्प, निर्विवाद।
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग योगी।।1।।
वेद को प्रमाण मान अर्थ-योजना बखान।
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग-भोगी।।2।।
ध्यान में धरे विरक्त, भाव से भजे सुभक्त।
त्यागते अघी अशक्त पोच पाप रोगी।।3।।
शंकरादि नित्य नाम जो जपे विसार काम।
तो बने विवेक-धाम, मुक्ति क्यों न होगी।।4।।

भाव : ओ३म् के सार्थक जप व ध्यान से मनुष्य का सर्व कल्याण सम्भव है। शंकर, शिव, ब्रह्मा व विष्णु सब उसी के नाम हैं। इसके जप से मनुष्य विवेकशील बनता है।

अभ्यास

1. अनादि नाद कौन सा है जिसके बारे में विवाद नहीं है?
2. इस अनादि नाम को कौन नहीं भूलते।
3. वेद को प्रमाण मानने वाले किसका गान करते हैं?

4. उस नाद का त्याग कौन करते हैं।
5. मुक्ति पाने का साधन यहाँ क्या बताया गया है।
6. ओ३म् का जप ध्यान आदि कौन करते हैं।

पाठ-4

गीता के दो श्लोक

महाभारत के युद्ध में कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव, पाण्डव सेनाएँ युद्ध के लिए आमने-सामने खड़ी हैं। श्रीकृष्ण जी वीर अर्जुन के सारथी के रूप में हैं। वे अर्जुन के रथ को लेकर शत्रु सेना की स्थिति जानने के लिए एक ऊँचे स्थान पर जाते हैं, जहाँ से दोनों पक्ष की सेनाएँ दिखाई पड़ रही हैं।

अर्जुन अपने सामने युद्ध के लिए विपक्ष में खड़े अपने सगे-सम्बन्धियों को देखकर मोह (अपनों से आसक्ति) से घिरकर हताश और व्याकुल हो जाते हैं। वे श्रीकृष्ण जी से कहते हैं कि "हे केशव! मैं सब कुछ छोड़कर जंगल चला जाऊँगा, संन्यास ले लूँगा, सभी दुःख झेल लूँगा, किन्तु अपने सगे-सम्बन्धियों के खून से हाथ रँगकर राजसुख नहीं भोग सकता। मैं यह युद्ध कदापि नहीं कर सकता।"

श्लोक 1—श्रीकृष्ण जी अर्जुन को मोह में फँसा देखकर उसे कर्म का महत्त्व बताते हुए गीता का उपदेश देते हुए कहते हैं कि हे अर्जुन!

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतु भूर्मा ते सङ्गोस्त्वकर्मणि॥ अ./2/47

शब्दार्थ—**कर्मण्येव**–कर्म में ही, **ते**–आपका, **अधिकार**–अधिकार, **मा**–नहीं, **फलेषु**–फल में, **कदाचन**–कभी भी, **तेसङ्गोस्त्व**–तुम्हारी प्रीति, **कर्मफल हेतु भूमा**–कर्म के फल की प्राप्ति में।

अर्थ–हे अर्जुन! मानव का अधिकार केवल कर्म करने में है, फल

प्राप्ति में कभी भी नहीं है, आप कर्मों के फल की वासना वाले मत हों, आपकी प्रीति केवल कर्म करने में हो। युद्ध के मैदान में एक क्षत्रिय का केवल यही धर्म व कर्म है कि वह शत्रु का अधिक से अधिक विनाश करे। इसलिए मोह त्यागकर युद्ध करो।

श्लोक 2—श्रीकृष्ण जी अर्जुन का मोह दूर करने के लिए उन्हें आत्मा के शाश्वत (सदा रहने वाली) और शरीर के नश्वर (निश्चित रूप से नाश होने वाला) होने का बहुत ही सुन्दर व शिक्षाप्रद उदाहरण देते हुए कहते हैं—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यानि संयाति नवानि देही॥ अ./2/22

शब्दार्थ—**वासांसि**—वस्त्र, **जीर्णानि**—फटे-पुराने, **यथा**--जिस प्रकार, **विहाय**—उतारकर, **नवानि**—नए, **गृहणाति**—धारण करना, **नरोऽपराणि**—मनुष्य व कोई भी प्राणी तथा उसी प्रकार, **संयाति**—धारण करना, **देही**—जीवात्मा।

अर्थ—श्रीकृष्ण जी कहते हैं, "हे अर्जुन! जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने फटे-पुराने वस्त्रों को उतारकर नए वस्त्र धारण कर लेता है उसी प्रकार यह आत्मा (शाश्वत) इस पुराने शरीर (नश्वर) को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है। आत्मा का शरीर से मिलन जन्म और पृथक् होना मृत्यु है।

अतः आपका मोह करना उचित नहीं है। आप अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करें। अपने शत्रु का अधिक से अधिक विनाश करें। यही क्षत्रिय का युद्ध के मैदान में धर्म व कर्म है।

अभ्यास

1. गीता में कौन किसको उपदेश दे रहा है?
2. अर्जुन ने श्रीकृष्ण जी को युद्ध के लिए क्यों मना कर दिया?
3. मनुष्य का अधिकार किसमें है और किसमें नहीं?
4. श्लोक में आत्मा व शरीर को कैसा बताया गया है?
5. युद्ध के मैदान में एक क्षत्रिय का क्या धर्म है?
6. शब्दार्थ लिखिए—फलेषु, वासांसि, जीर्णानि, नवानि, गृह्णाति, संयाति, देही, कर्मण्येव, कदाचन, कर्मफल हेतु भूर्मा, ते सङ्गोस्त्वकर्मणि।